بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक07.07.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

विरोधियों का बुरा अन्जाम
और
क़बूल-ए-अहमदियत की ईमान वर्धक घटनाएँ

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि अम्बिया अलैहिस्सलाम के इतिहास में हम देखते हैं कि उनके दावे के बाद उनका विरोध भी होता है तथा जैसे जैसे जमाअत फैलती है, विरोध और ईष्या की आग भी बढ़ना शुरु हो जाती है। किन्तु च्यूँकि दावा करने वाला अल्लाह तआला की ओर से भेजा गया होता है और अल्लाह तआला ने उसे विरोध के बावजूद उन्नति के वादे और ख़ुश ख़बरियाँ दी हुई होती हैं इस कारण से कोई विरोध उन्नति के मार्ग में रोक नहीं बनता तथा न ही बन सकता है। अल्लाह तआला ने जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मसीह व मेहदी बनाकर भेजा, आपके साथ भी इस सुन्नत के अनुसार यही सलूक अल्लाह तआला फ़रमा रहा है। जहाँ विरोध के विषय में अल्लाह तआला ने सूचना दी, वहाँ विरोधियों के बुरे अन्त तथा विरोध के बावजूद आपके सिलसिले के बढ़ने और आपके समर्थन की सूचना दी। अतः अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया कि मैं तेरे शुद्ध और दिल से प्रेम करने वालों का गिरोह भी बढ़ाऊँगा। फिर एक इलहाम यह है कि मैं तेरे साथ साथ तेरे प्यारों के साथ हूँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि يَنْصُرُكَ رِجَالٌ نُوْحِيْ اِلَيْهِمْ مِنَ السَّمَآءِ अर्थात- तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिन के दिलों में हम अपनी ओर से इलहाम करेंगे। फिर फ़रमाया कि मैं तुझे सम्मान दूँगा और बढ़ाऊँगा। फिर एक इलहाम यह है कि يَنْصُرُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ अर्थात- ख़ुदा अपनी ओर से तेरी सहायता करेगा।

फिर अल्लाह तआला का यह भी वादा है तबलीग़ के बारे में, कि मैं तेरी तबलीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊँगा। फिर यह भी फ़रमाया- كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي कि ख़ुदा तआला ने यह लिख छोड़ा है कि मैं और मेरा रसूल ग़ालिब आएँगे। अब ये केवल प्रत्यक्ष बातें नहीं जो नऊज़ु बिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से सम्बंधित करके बयान कर दीं बल्कि अल्लाह तआला हर ज़माने में इसका क्रियाशील इज़हार भी करता रहता है। कहीं अल्लाह तआला विरोधियों की चालें उन पर उलटा कर अपने समर्थन के अमली नज़ारे दिखाता है, कहीं स्वयं उनका मार्गदर्शन करके अहमदियत की सच्चाई दिखाता है, कहीं ग़ैरों के दिलों में डालता है कि वे ग़ैरों के हमलों के विरुद्ध हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों की सहायता और समर्थन करें। इस समय मैं कुछ घटनाएँ पेश करता हूँ विरोधियों के बुरे अन्जाम के बारे में।

नाज़िर दावत इलल्लाह क़ादियान ने लिखा है कि उनके मुअल्लिम हैं इसहाक़ साहब, वे रमज़ान से पहले अपने एक गाँव में गए अपने एक रिश्तेदार के, ताकि घर वालों को रमज़ान की समय सारणी के विषय में बता दें। कहते हैं कि जब घर वालों को रमज़ान की महानता और बरकतों के बारे में बता रहे थे, टाईम टेबिल देने के बाद तो इसी बीच एक ग़ैर अज़-जमाअत नौजवान इक़बाल नामक आकर बैठ गया। कुछ देर तो वह मुअल्लिम साहब की बातें सुनता रहा फिर उसने घर वालों से पूछा कि यह कौन है? उनके रिश्तेदारों ने सम्भवतः स्पष्ट रूप से बताना उचित न समझा कि अहमदिया जमाअत का मुअल्लिम है, उन्होंने केवल इतना कहा कि यह अमुक गाँव से आया है। किन्तु मुअल्लिम साहब ने साफ़ तौर पर अपना परिचय कराया कि मैं अहमदिया जमाअत का मुअल्लिम हूँ। उस पर यह व्यक्ति बड़ा क्रोधित हुआ, आग बगोला हो गया। मुअल्लिम ने पूरा परिचय कराना चाहा ताकि उसकी कुछ कुधारणाएँ दूर करे लेकिन उस व्यक्ति ने सुनने से इंकार कर दिया। कहते हैं- बात चीत के समय क़ुर्आन मजीद, इस्लाम और

हुज़ूर-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आता तो यह व्यक्ति कहता कि आप लोगों को ये इस्लमी शब्द प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं। वही पाकिस्तानी मौलवियों वाला प्रभाव है और जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का नाम आता तो वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को और जमाअत को बड़ी गन्दी गालियाँ देता और कहता कि मैं सऊदी अरब, बहरीन तथा क़तर इत्यादि में रह कर आया हूँ, आप लोगों के बारे में सब कुछ जानता हूँ। सारे इस्लामी देशों ने आपके विरुद्ध फ़तवे दिए हुए हैं और यह भी कहा हुआ है कि यदि रास्ते में साँप और क़ादियानी मिल जाएँ तो साँप को छोड़ दो मगर क़ादियानी की हत्या कर दो। और ये कहते हैं कि बार बार वह मुझे मारने के लिए उठता था कि आज मुझे अवसर मिला है तो मैं क़ादियानी को मारूँ, हत्या करूँ और पुण्य कमाऊँ, परन्तु वह सफल न हो सका। कहते हैं- मैंने बड़े धैर्य एवं संतोष से उसकी सारी बातें सुनीं। जब वह अधिक ही अपशब्दों पर उतर आया, तो कहते हैं- मैंने उसे कहा कि यदि मैं अहमदिया जमाअत का मुअल्लिम न होता तो मरने मारने की आपकी इच्छा को भी पूरी कर देता लेकिन हमें गालियों के बदले दुआएँ देने की शिक्षा दी गई है इस कारण से मैं कुछ नहीं कहता। इस प्रकार वह चुप हो गया तथा यह चेतावनी दी इनको, कि यदि आज के बाद तुम इस गाँव में नज़र आए तो बड़ा बुरा अन्जाम होगा। कहते हैं- मैंने उसको केवल यह उत्तर दिया कि यह तो समय बताएगा कि बुरा अन्जाम किस का होगा और यह कहकर मैं चुपचाप वहाँ से उठकर आ गया। यह व्यक्ति निकट के गाँव में जमाअत के लोगों से भी कहता था कि क़ादियानियत को छोड़ दो लेकिन लोग इसकी बात पर ध्यान नहीं देते थे। अतः कहते हैं- मैंने रमज़ान के बाद पन्द्रह दिनों की छुट्टी ली, जब वापस आया तो एक महिला ने बताया कि मौलवी इक़बाल जिसने जमाअत को गालियाँ दी थीं उसको सहसा दिल का दौरा पड़ा और वह मर गया। तो इस घटना से न केवल जमाअत के लोगों के ईमान में वृद्धि हुई बल्कि इस छोटे से गाँव में ग़ैर अज़-जमाअत भी बड़े प्रभावित हुए कि हमने अपनी आँखों से यह अल्लाह तआला का समर्थन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए देखा और अपमान करने वाले को अपमानित और नष्ट होते हुए देखा।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल हम इस भौतिक संसार में देखते हैं कि सांसारिक उन्नति के कारण लोग दीन से दूर हट रहे हैं किन्तु दुनया में ऐसा वर्ग भी है जो दीन में रूचि रखता है तथा उचित मार्ग की खोज में है और अल्लाह तआला भी उनके दिलों को जानता है इस लिए ज़माने के इमाम को क़बूल करने के लिए दिल भी खोलता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को जब भेजा तो आख़िर इसी लिए भेजा था कि दुनया उन्हें क़बूल भी करे और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से क़बूल कर भी रही है।

आईवरी कोस्ट के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक गाँव में एक लोकल मुबल्लिग़ के साथ तबलीग़ के लिए गया तो लोगों को मसीह मौऊद और इमाम मेहदी के आगमन के विषय में बताया। कुछ समय पश्चात दोबारा वहाँ गए तो उस गाँव के इमाम सहित पन्द्रह लोगों ने अहमदियत क़बूल कर ली। उनको बताया गया कि इस महीने ख़ुद्दामुल अहमदिया का राष्ट्रीय समागम आबी जान में हो रहा है। इस पर गाँव वालों ने कहा कि एक व्यक्ति को आबी जान भिजवाया जाए ताकि वह जमाअत को निकट से देखे कि ये लोग कैसे हैं। अतः इस गाँव से एक व्यक्ति इज्तिमा में शामिल हुआ और वापस आकर आबी जान में जो कुछ देखा था वह लोगों को बताया कि किस प्रकार ये लोग रहते हैं और किस प्रकार ये मुहब्बत और प्यार तथा भाईचारे का वातावरण था, इसका बड़ा अच्छा प्रभाव हुआ। इस प्रकार कुछ समय पश्चात जब यह लोग दोबारा तबलीग़ के लिए गए वहाँ, तो रात को ईशा की नमाज़ के बाद तथा फिर सुबह को फ़ज्र की नमाज़ के बाद मसीह मौऊद के आगमन के बारे में सवाल जवाब होते रहे तथा काफ़ी लम्बे समय तक ये प्रश्नोत्तर सभा चलती रही। इस पर कहते हैं कि 26 लोगों ने अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ पाई और इस प्रकार वहाँ 41 लोगों की जमाअत भी स्थापित हो गई।

फिर विरोधियों के बुरे अंजाम तथा अल्लाह तआला के समर्थन की एक घटना बयान करते हुए बैनिन के एक मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मेरे रीजन में दो बड़े रेडियो स्टेशनों के द्वारा जमाअत की तबलीग़ का साप्ताहिक कार्यक्रम जारी था और उस क्षेत्र की एक बड़ी संख्या तक अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत का सन्देश पहुंच रहा था। एक रेडियो स्टेशन पर प्रत्येक बुद्ध को तीस मिन्ट का प्रोग्राम प्रसारित होता था परन्तु उस रेडियो चैनल का वाईस डायरैक्टर हमारा विरोध किया करता था तथा हमारे प्रोग्रामों में रोक पैदा करने का प्रयास करता था। अल्लाह का करना ऐसा हुआ कि उसी रेडियो स्टेशन में भ्रष्टाचार के आरोप में न्यायालय ने उसे दंड दे दिया और जो नए वाईस डायरैक्टर बने उन्हें हमने मिशन आने का आमन्त्रण दिया। उन्हें जमाअती और इस्लामी आस्था के सम्बंध में बताया गया। कुछ लिट्रेचर भी पढ़ने के लिए दिया गया और अपनी तबलीग़ का लक्ष्य भी बताया। इसके पश्चात वे कुछ समय तक हमारे तबलीग़ी प्रोग्राम सुनते रहे। इस प्रकार कुछ समय बाद जब उनसे दोबारा भेंट हुई तो ये नए डारैक्टर कहने

लगे कि मैं आपकी तबलीग़ से बड़ा प्रभावित हुआ हूँ। आपकी तबलीग़ का अन्दाज़ बड़ा लुभावना है, मैं आपको इसी धनराशि में जो आप एक प्रोग्राम के लिए अदा कर रहे हैं एक और साप्ताहिक प्रोग्राम निरन्तर रूप में फ्री देता हूँ ताकि वास्तविक धार्मिक ज्ञान का जनता को बोध हो तथा इस्लाम के विषय में अनुचित आस्था का निवारण हो। कहाँ तो प्रोग्राम को जारी रखने की चिंता थी और कहाँ अल्लाह तआला ने ऐसी कृपा फ़रमाई कि उसी ख़र्च में अधिक समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का और इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम पहुंचाने का हमें मिल गया।

फिर अल्लाह तआला के स्वयं दिलों को खोलने की एक घटना है। यह मिस्र के एक दोस्त हैं अहमद साहब। कहते हैं- इस्लाम की उचित और सरल व्याख्या करने पर मैं आप लोगों की प्रशंसा करता हूँ। आप जो पेश करते हैं, वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रहमतुल लिलआलमीन का वास्तविक इस्लाम है। हम लोग दायश और उसकी भूमिका से थक चुके हैं और ख़ुदा करे कि हम समस्त लोगों की सोचें आप जैसी हो जाएँ। कहते हैं कि मैंने प्रोग्राम में बताए हुए तरीक़े के अनुसार दो रकअत इस्तिख़ारे की नमाज़ अदा की, उसी रात सपने में देखा कि मेरे घर के सामने के सारे घर हटाए जा रहे हैं यहाँ तक कि मेरे घर के सामने ख़ाली जगह बन गई। फिर मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के घर को देखा जो आप अपने प्रोग्रामों की बैक स्क्रीन पर दिखाते रहते हैं, दारुल मसीह का इलाक़ा क़ादियान का। कहते हैं वह मैंने सपने में देखा। कहते हैं- मैंने उस घर को अर्थात दारुल मसीह के क्षेत्र को ज़मीन में से पौधे की तरह निकलते हुए देखा और में चकित था कि यह किस प्रकार निकल रहा है। फिर मैंने उसमें से नूर को निकलते हुए देखा, फिर मैंने लोगों को कहते हुए सुना कि चाँद दिन में निकला है। मैंने अपने पीछे देखा कि सूरज भी निकला हुआ था तो मैंने उनसे कहा कि सूरज और चाँद दोनों निकले हैं। मैं बड़ा प्रसन्न हुआ क्यूँकि पहली बार मैंने इस्तिख़ारा किया और अल्लाह तआला से जवाब पाया। यद्यपि मैं पहले से मुसलमान था परन्तु मैं पहली बार अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त कर पा रहा हूँ और यह केवल अहमदिया जमाअत के कारण है, मैं आप लोगों का आभारी हूँ।

फिर सपने के द्वारा स्वयं अल्लाह तआला किस प्रकार मार्गदर्शन फ़रमाता है। इस बारे में यमन की एक महिला ऐमन साहिबा कहती हैं कि मुझे कम आयु से ही इमाम मेहदी के ज़माने तक जीवित रहने की इच्छा थी तथा इसके लिए दुआ करती थी। एक दिन मैं एक अरबी चैनल देख रही थी कि उस दीनी प्रोग्राम में एक विख्यात मौलवी से किसी ने अहमदिया जमाअत का नाम लिए बिना पूछा कि उसका दावा है कि इमाम मेहदी आ चुके हैं तथा उनके बाद ख़िलाफ़त क़ायम हो चुकी है। मौलवी साहब ने उत्तर दिया कि ये लोग कुधारणाओं का शिकार हैं, झूठे लोग हैं इस लिए आप इन चक्करों में पड़ने के बजाए अपना सामान्य जीवन व्यतीत करें क्यूँकि जब इमाम मेहदी आएगा तो सबको पता चल जाएगा, उनको ढूँडने की आवश्यकता नहीं रहेगी। कहती हैं- यह बात मेरे मस्तिष्क में अटक गई और फिर एक दिन 2009 में मेरे छोटे भाई ने मुझे बताया कि उसने एक चैनल देखा है कि कुछ लोग इमाम मेहदी के आगमन की घोषणा कर रहे थे। यह सुनते ही मुझे कथित मौलवी साहब से पूछे जाने वाला प्रश्न तथा उत्तर याद आ गया और मैं समझ गई कि वह प्रश्न इमाम महदी के आगमन की घोषणा करने वाली इस जमाअत के बारे में था। कहती हैं कि मैंने अपने भाई से उस चैनल की फ्रैक्वंसी ली और फिर जब यह चैनल लगाया तो वहाँ पर प्रोग्राम अलहवारुल मुबाशिर लगा हुआ था। मैंने उस प्रोग्राम में शामिल होने वालों को एक एक करके बड़ी गहरी नज़र से देखा, उनके चेहरों पर विचित्र प्रकार की चमक और नूर था लेकिन मुझे उन पर तरस आया कि इतने समझदार होने के बावजूद ये लोग पथभ्रष्ट हो गए हैं और मैंने कहा कि आज तो हमें एकता की आवश्यकता है लेकिन इन्होंने आकर एक सम्प्रदाय और बना लिया। क्या इस्लाम में इससे पहले सम्प्रदाय कम थे। इस विचार के बावजूद जब मैंने उनकी बातें सुनीं तो वे मेरे दिल को लगीं। कहती हैं कि प्रोग्राम की समाप्ति पर एक क़सीदा पेश किया गया जिसके बारे में यह लिखा था कि यह हज़रत इमाम मेहदी का लिखा हुआ है। इस क़सीदे के शब्द और प्रभाव अदभुत था। मैं अपने पति के साथ इस चैनल को देखने लगी। प्रतिदिन हमारा लगाव इस चैनल के साथ बढ़ता गया यहाँ तक कि केवल कुछ दिनों में ही हमारे घर में अन्य सभी चैनल बन्द हो गए और केवल एम टी ए चलने लगा। हमारे घर का प्रत्येक व्यक्ति इस चैनल पर बयान होने वाले निष्कर्ष को पसन्द करने लगा। हज़रत मसीह मौऊद के कलाम का प्रभाव ही बड़ा विचित्र था। आपका क़सीदा सुनते समय मेरी आँखों से आँसू जारी हो जाते क्यूँकि ये शब्द किसी ख़ुदा की ओर से आने वाले के मुंह ही से निकल सकते हैं। किसी साधारण मनुष्य के बस की बात नहीं कि ऐसा प्रभाव कारी तथा सुगम कलाम कह सके। कहती हैं कि इस प्रकार समस्त बातों के विषय में संतुष्टि प्राप्त कर लेने के पश्चात मैंने जनवरी 2010 में बैअत का पत्र लिख दिया और फिर कहती हैं कि मेरे पति ने इन्टरनैट कैफ़े से कई बार पत्र भेजने का प्रयास किया परन्तु सफलता न मिली। कहती हैं कि उस समय जब यह सफलता नहीं मिल रही थी मुझे अपनी युवा अवस्था का एक सपना याद आ गया कि एक बंजर ज़मीन में मुझे

अपने सामने बड़ा लम्बा साया दिखाई देता है जिसके बारे में सपने में यह आभास होता है कि ये आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छवि हैं। यह छवि मेरी ओर हाथ बढ़ाती है जिसे पकड़ने के लिए मैं दौड़ती हूँ, इसी प्रयास में कभी गिरती हूँ और फिर उठकर दौड़ना शुरु कर देती हूँ। कहती हैं कि ऐसे में मेरी आँख खुल जाती है। कहती हैं- मेरा विचार है कि अब इस सपने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छवि का अभिप्रायः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे जो छवि के रूप में आपके गुणों की छवि हैं और ज़िल्ली नबी हैं और यह केवल अल्लाह तआला की कृपा है कि उसने मुझे प्रयास करके आपका हाथ थामने का सामर्थ्य प्रदान किया क्यूँकि कई प्रयासों की असफलता के बाद अन्ततः मार्च 2010 में हम अपनी बैअत भेजने में सफल हो गए। फिर कहती हैं कि जब से बैअत की है ख़ुदाई कृपाएँ वर्षा की भांति बरस रही हैं तथा क़ुदरत के अदभुत दृश्य इतने दिखाई देते हैं कि जिन को बयान करने से हमारी ज़बानें विवश हैं। वास्तव में वह बड़े चमत्कारों वाला ख़ुदा है। मैंने जब भी दुआ की है क़बूलियत के निशान देखे हैं। हमारा ख़ुदा बड़ा ही मेहरबान है। फिर आगे ये लिखती हैं कि आपकी और समस्त मोमिनों की मुहब्बत मेरे दिल में मेरे अपनी जान और संतान और सारे लोगों तथा ठंडे पानी से भी अधिक हो गई है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- ख़ुदा तआला शैतानी हमलों के विरोध के बावजूद दिव्यात्माओं का मार्ग दर्शन फ़रमाता रहता है तथा उनके सीने खोलता है तथा अहमदियत क़बूल करने की तौफ़ीक़ देता है। असंख्य ऐसी घटनाएँ सामने आती हैं जब अल्लाह तआला ख़ुद पकड़ कर क़बूल-ए-अहमदियत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन और सहायता के दृश्य दिखाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने फ़रमाया था कि ख़ुदा तेरे नाम को उस दिन तक जब दुनया टूट जाए, सम्मान के साथ क़ायम रखेगा और तेरी दावत को ज़मीन के किनारों तक पहुंचा देगा। फिर फ़रमाया- वे लोग जो तेरे अपमान की गतिविधियों में लगे हुए हैं और तेरी असफलता चाहते हैं और तुझे नष्ट करने के विचार में हैं, वे स्वयं असफल रहेंगे तथा असफलता और दुर्भाग्य के साथ मरेंगे।

अतः अल्लाह तआला इसके अनुसार प्रतिदिन जमाअत में निष्ठा और श्रद्धा के शामिल होने की प्रत्येक निष्ठावान को, हर अहमदी को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और जब हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए ख़ुदा तआला के असंख्य वादे पूरे भी हुए हैं तो इन्शाअल्लाह तआला जो अधिक संख्या का वादा है, वह भी पूरा होगा। आवश्यकता इस बात की है कि अल्लाह तआला की कृपाओं को ग्रहण करने के लिए हम अपनी निष्ठा में व्यापकता लाएँ ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनने वाले बनें। अल्लाह तआला इसकी भी हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। एक वृत्तांत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पेश करता हूँ। आप फ़रमाते हैं कि-

क्या वे समझते हैं अर्थात विरोधी कि अपनी योजनाओं से और अपने आधार रहित झूठों से तथा अपनी मन गढ़त बातों से तथा अपनी हंसी और ठट्टे से ख़ुदा की योजना को रोक देंगे अथवा दुनया को धोखा देकर इसे निलम्बित कर देंगे, जिसका ख़ुदा ने आसमान पर इरादा किया है। यदि पहले कभी हक़ के विरोधियों को सफलता मिली है तो अब भी सफल हो जाएँगे। यदि हक़ के जो विरोधी हैं यदि पहले सफल हुए हैं तो अब भी हो जाएँगे परन्तु यदि यह प्रमणित बात है कि ख़ुदा के विरोधी और उसके निश्चय के विरोधी, जो आसमान पर किया गया, वे सदैव अपमान और असफलता उठाते हैं तो फिर इन लोगों के लिए भी एक दिन असफलता, दुर्भाग्य और बदनामी पेश है। ख़ुदा का फ़र्मूदा कभी व्यर्थ नहीं गया और न जाएगा। वह फ़रमाता है- كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِي अर्थात- ख़ुदा ने प्रारम्भ से ही लिख छोड़ा है तथा अपना विधान और अपनी सुन्नत कह दिया है कि वे और उसके रसूल सदैव ग़ालिब रहेंगे। अतः क्यूँकि मैं उसका रसूल तथा दूत हूँ परन्तु बिना किसी नई शरीअत, नए दावे और नए नाम के अपितु उसी नबी करीम ख़ातमुल अम्बिया के नाम पाकर और उसी में होकर तथा उसी का अवतार बनकर आया हूँ इस लिए मैं कहता हूँ कि जैसा आदि काल से अर्थात आदम के ज़माने से लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक सदैव इस आयत का भावार्थ सच्चा निकलता चला आया है, ऐसा ही अब भी मेरे बारे में सच्चा निकलेगा, इन्शाअल्लाह।

TOLL FREE NO: 180030102131